

इंडिया इंटरनेशनल माहेश्वरी सोसाइटी – क्यों और कैसे?

[इंडिया इंटरनेशनल सोसाइटी (रजि०) की वार्षिक साधारण सभा दिनांक 18.03.2007 में दिया गया न्यायमूर्ति श्री रमेशचन्द्र लाहोटी, पूर्व प्रधान न्यायाधीश, भारत का वक्तव्य]

इंडिया इंटरनेशनल माहेश्वरी सोसाइटी (आई० आई० एम० एस०) की वार्षिक साधारण सभा में सदस्यों एवम् अतिथियों की अच्छी संख्या में उपस्थिति अत्यंत उत्साहवर्द्धक है। श्री टी० आर० माहेश्वरी इस संस्था से इसके जन्म से जुड़े हैं और संस्था के शैशव में इसका लालन-पालन करने में उन्होंने महती भूमिका निभायी है। वे भारतीय प्रशासनिक सेवा के सदस्य रहें हैं और भारतीय शासन की सेवा में उच्च पद पर आसीन रह कर उन्होंने एक वरिष्ठ अधिकारी की हैसियत से प्रशासन को देखा है। एक नागरिक की हैसियत से संपूर्ण भारत पर विहंगम दृष्टि डालते रहे हैं। और, माहेश्वरी समाज के जागरूक चिंतनशील सदस्य की तरह समाज और सामाजिक गतिविधियों को देखते-परखते रहें हैं। वे नियमों का पालन भी करते हैं और प्रत्येक संयोजन के साथ उसकी प्रायोगिक उपादेयता को भी दृष्टिगत रखते हैं। उन्होंने एक अभिनव प्रयोग किया है। आज की इस सभा में न केवल सदस्य आमंत्रित हैं बल्कि, सदस्यता के दायरे से बाहर जाकर समाज के प्रतिनिधि, न केवल दिल्ली के बल्कि आसपास के नगरों से भी आमंत्रित किये गये हैं। उनकी भावना रही है कि—

दोस्तों को भी मिले दर्द की दौलत या रब,
मेरा अपना ही भला हो यह मुझे मंजूर नहीं।

सुख में और दुःख में सभी हितैषी और अपने साझीदार बनें। सुख की अपनी समृद्धि है और दुःख की अपनी दौलत है। वह भी बांटें, यह भी बांटें। अनुकूल समय का आनंद वितरित करने से बढ़ता है और प्रतिकूल समय में अपने और पराये की पहचान हो जाती है— कौन सच्चा हितैषी है और कौन केवल औपचारिकता निभाता है। बाहर से आए अतिथियों में चंडीगढ़, जयपुर, नागपुर तथा इंदौर से आए अतिथियों को मैं पहचान रहा हूं। सभी का स्वागत है। इस संस्था की स्थापना से आज तक की कहानी चाहे वह प्रगति की कहानी हो चाहे 'रूकावट के लिए खेद है' का उल्लेख।

सभी सुनें, समझें और सुझाव दें। श्री टी० आर० माहेश्वरी ने ए० जी० एम० का द्वार सभी के लिए खोल दिया है।

कुछ प्रश्न उठते रहे हैं— आई० आई० एम० एस० की स्थापना के पीछे कौन से विचार बीज रूप में हैं? यह संस्था क्या है? इसकी स्थापना की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई? इन पर कुछ चर्चा आप सब के समक्ष इसलिए करना चाहता हूं कि वास्तविकता से आपका साक्षात्कार हो सके और यदि कोई भ्रांति यत्किंचित कहीं हो तो उसका निवारण हो। मैं न्यायाधीश रहा हूं किन्तु आज आप सब के समक्ष अपने विचार व्यक्त करने के लिए खड़े होते हुए ऐसा अनुभव कर रहा हूं जैसे कि मैं स्वयं कटघरे में हूं। बीज प्रस्फुटित होकर विशाल वृक्ष क्यों नहीं बन सका? संस्था की स्थापना हुए लगभग 5—6 वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी, विस्तार और सक्रियता जितनी आ जानी चाहिए थी नहीं आ सकी, जबकि कर्मठ लोग इससे जुड़े रहे। इसके पीछे कारण क्या हैं? स्पष्टीकरण देना और आत्मनिरीक्षण करना आवश्यक प्रतीत होता है।

आई० आई० एम० एस० जैसी संस्था बने और दिल्ली से उसका शुभारंभ हो। इस विचार को जन्म, प्रेरणा और प्रोत्साहन अनेक प्रसंगों से मिला है।

लगभग 12 वर्ष हुए मैं जब दिल्ली आया तो यहां मैंने अनेक संस्थाएं देखीं। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यह संस्कृति, साहित्य और कला से संबंधित राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय उत्कृष्ट गतिविधियों का केन्द्र है। राजनीति से परे विशुद्ध बौद्धिक वातावरण में विचरण करने वाले लोग इस संस्था के सदस्य हैं और प्रबंधन में हैं। उदयपुर में माहेश्वरी महासभा का एक कार्यक्रम हुआ था जिसमें मुझे भी अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिला था। वहां भी मैंने देखा और कहा कि समाज के कार्यक्रमों से समाज का बुद्धिजीवी वर्ग और युवा कटे रहते हैं। बुद्धिजीवी मौन और एकाकी रहते हैं और युवा वर्ग अन्यत्र आकर्षित होकर वहां जुड़ जाता है। इस वर्ग के लोगों से बातचीत कीजिए तो वे कहते हैं कि समाज के संगठन और कार्यक्रमों में हमारे लिए न तो स्थान है और न करने के लिए कुछ है, हम वहां आकर क्या करेंगे? समाज में जो लोग नेतृत्व दे रहे होते हैं उनका भी ध्यान उन्हीं लोगों की ओर जाता है जो समाज की परियोजनाओं में आर्थिक सहयोग दे सकते हैं

ताकि परियोजनाएं चलती रहें। इसमें कोई संदेह नहीं कि आज के समय में कोई भी काम खासकर बड़ा काम पैसे के अभाव में नहीं हो सकता। इसलिए जो लोग आर्थिक सहयोग दे सकते हैं वे अपरिहार्य होते हैं। किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वैश्वीकरण और उदारीकरण के इस युग में जिस ज्ञान-बोध आधारित समाज (Knowledge Based Society) की रचना हो चुकी है और विकास हो रहा है, उसमें बुद्धिजीवियों की अनदेखी नहीं की जा सकती। आज विश्व भर के आंकड़े देखे जाएं तो विश्व के सर्वाधिक धनी लोगों की सूची में ऊपर लिखे नाम उन्हीं लोगों के मिलेंगे जो बुद्धिजीवी हैं। कोई समय था जब केवल लक्ष्मी का वर्चस्व रहा करता था। अब समय आ गया है कि हम प्रतिवर्ष दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी जी के जिस चित्र की पूजा करते हैं उसमें निहित संदेश को ग्रहण करें। दीपावली पर लक्ष्मी जी का पाना जो घर-घर में लाकर पूजा में रखा जाता है उसमें लक्ष्मी जी के साथ एक ओर सरस्वती और दूसरी ओर गणेश होते हैं। सरस्वती विद्या की देवी हैं और गणेश बुद्धि के देवता हैं। संदेश यह है कि लक्ष्मी वहीं आसीन होती हैं जहां विद्या और बुद्धि दोनों आसीन होते हैं।

दिल्ली में माहेश्वरी समाज की संस्थाओं में से जहां तक मेरी जानकारी है, सबसे अधिक सक्रिय है, माहेश्वरी यूथ क्लब। वर्ष में एक बार उनका वर्षाभंगल कार्यक्रम होता है। कमानी ऑडिटोरियम का सभागार पूरा भरा होता है और उनके कार्यक्रम की उत्कृष्टता देखते बनती है। वर्ष भर उनके अन्य कार्यक्रम भी समय-समय पर होते रहते हैं जिनके परिपत्र मेरे पास भी आते हैं। एक दिन इस क्लब के संस्थापक सदस्यों में से एक श्री अशोक डागा मुझे मिल गए। मैंने उनसे पूछा कि इस क्लब की स्थापना का विचार उनके मन में कैसे आया और कैसे उन्होंने इस क्लब की स्थापना की? वे बोले— मैं तो दिल्ली से बाहर का रहने वाला हूं। मित्र बनाने का मुझे शौक है। जब मैं दिल्ली आया तो दो-तीन वर्ष में ही मेरे अनेक मित्र बन गए। एक दिन मुझे विचार आया कि दिल्ली में मेरे मित्र तो बहुत हैं किन्तु मेरे अपने समाज में मेरा कोई मित्र नहीं है। बस, यहीं उस विचार का सूत्रपात हुआ कि एक संस्था या क्लब की स्थापना की जाए जिसके सदस्य माहेश्वरी युवा हों और उनके बीच प्रगाढ़ मित्रता हो। इस प्रकार माहेश्वरी यूथ क्लब की स्थापना हुई।

एक जिज्ञासा होती है कि आज के समय में हम अपनी सोच केवल माहेश्वरी समाज तक ही सीमित क्यों रखें? संस्था का गठन हो, मैत्री का अवसर हो या मिल बैठने का कोई कारण। यह 'माहेश्वरी' का बंधन अथवा सीमांकन क्यों? मैंने भी इस पर सोचा है। हम सभी जागरूक नागरिक हैं। हम में से प्रत्येक का यह लक्ष्य और कर्तव्य है – और होना— चाहिए कि हमें अपने राष्ट्र की सेवा करनी है। और, यह हम कैसे करें। प्रत्येक व्यक्ति इतना महान और क्षमतावान नहीं होता कि सीधा देश जैसी बड़ी इकाई की सेवा में कूद पड़े और सफल भी हो। देश की सेवा के लिए तत्पर होने और तदर्थ क्षमता को विकसित करने की एक प्रक्रिया है। सबसे पहले हम अपने व्यक्तित्व को विकसित करें। देश की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति होता है। व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ और सुदृढ़ हो। उसमें चारित्रिक दृढ़ता भी हो। व्यक्तित्व को समुन्नत करने के साथ ही वह अपने परिवार पर भी ध्यान दे। परिवार के सभी सदस्यों को वैयक्तिक स्तर पर उन्नत कर उन्हें एक सुसंगठित परिवार के रूप में गठित कर समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करे। तदनन्तर अपने समाज की सेवा करे। समाज की परिभाषा है— ऐसे व्यक्तियों (अथवा परिवारों) का समूह जिनकी जीवनपद्धति और विचारधारा समान हैं और लक्ष्य भी एक है। यदि प्रत्येक समाज सुसंगठित और उसके सदस्य आदर्श हैं तो वे एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। यदि उनका चिन्तन क्षुद्र न हो और वे छोटी-छोटी इकाइयों में निजी स्वार्थ के कारण बंटे हुए न हो तो एक सशक्त राष्ट्र की संरचना हो सकती है। दूसरे शब्दों में, अपने समाज की सेवा एक प्रकार का प्रशिक्षण है जिसको करने से व्यक्ति में सेवा भावना, आत्मबल और आत्म-विश्वास जाग्रत होता है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने तो यहां तक कह दिया कि जिस व्यक्ति को अपनी जाति, अपने धर्म और अपनी भाषा का अभिमान नहीं है वह 'नर नहीं, निरा अधम जीवित पशु समान है'। मैथिलीशरण जी ने जाति और धर्म शब्दों को संकीर्ण अर्थ में प्रयोग नहीं किया है। यहां जाति से अर्थ है एक समाज, और धर्म से अर्थ है कुछ आधारभूत मानव मूल्य जिनमें एक समूह विशेष के सदस्य आस्था और विश्वास रखते हैं।

संगठन का महत्त्व है। अथर्ववेद का एक श्लोक है जिसका अनुवाद इस प्रकार है—

We must learn to progress together

Or, miserably perish together

For, a person can live individually

But, can only survive collectively

मैंने अनेक बार अब अपनी इस न्यूनता का अहसास किया है कि मैंने संस्कृत नहीं पढ़ी। इसी कारण कभी—कभी संस्कृत में मूल श्लोक उद्धृत करने के स्थान पर अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। जो भी हो, अथर्ववेद का संदेश है कि हमें प्रगति करनी है तो साथ रहकर करनी होगी, अन्यथा सामूहिक विनाश की दुखद परिणति से साक्षात्कार के लिए तत्पर रहना चाहिए। हम अकेले रहकर अपना समय तो गुज़ार सकते हैं किन्तु चुनौतियों से संघर्ष कर विजयी होते हुए जीवंत बने रहने के लिए हमारा अस्तित्व सामूहिक होना आवश्यक है।

समाज के सदस्य के रूप में व्यक्ति के मानस में एक अनूठी आकांक्षा का जन्म होता है। वही समाज बने रहते हैं जिसके सदस्य निरंतर यह सोचते रहते हैं और यह प्रश्न पूछते रहते हैं कि मैं समाज के लिए क्या कर सकता हूँ? बजाय इसके कि समाज ने मेरे लिए क्या किया, या क्या कर सकता है? ऐसे चिन्तन जब उसके व्यक्तित्व का अंग बन जाते हैं तो वही उसे अपनी क्षमता का उपयोग निरन्तर समाज के हित में करने के लिए उत्प्रेरित करते हैं।

एक और प्रश्न कभी—कभी उठता है। मुझसे भी कभी पूछा गया है कि क्या आई० आई० एम० एस० के माध्यम से अखिल भारतीय माहेश्वरी सभा के सामानांतर कोई संगठन खड़ा करने का प्रयास है? जब ऐसा संगठन पहले से ही मौजूद है तो उसी के साथ जुड़ कर अपना सहयोग देने के स्थान पर एक पृथक सामानांतर संगठन खड़ा करने के प्रयास का क्या औचित्य है? मैं स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहता हूँ कि आई० आई० एम० एस० के माध्यम से अ० भा० मा० स० के सामानांतर कोई संगठन खड़ा करने का प्रयास तो क्या विचार भी नहीं है। इस संगठन का उद्देश्य सिर्फ इतना है कि बुद्धिजीवी व्यक्ति जिनमें अधिकांशतः 'प्रोफेशनल्स', व्यवसायरत लोग होंगे,

वे जुड़ें, एक स्थान पर बैठें और सुसंगठित हों। उनका सामूहिक चिन्तन इस उद्देश्य से अनुप्राणित होगा कि हम कैसे वैयक्तिक और सामूहिक स्तर पर समाज की, और समाज के माध्यम से देश की सेवा कर सकते हैं। यह संस्था अ० भा० मा० महासभा की सहयोगी और पूरक संस्था होगी। अंतर इतना ही होगा कि एक सोच विशेष को रखने वाले लोग एक साथ बैठेंगे और समान प्रकार की पृष्ठभूमि, चिन्तन और शैली होने के कारण सहज संगठित और अधिक उपयोगी हो सकेंगे। अ० भा० मा० महासभा के अध्यक्ष आदरणीय श्री रामपाल जी सोनी से एक-दो बार कुछ इसी प्रकार की चर्चा हुई है। वे कर्मठ और दूर दृष्टि वाले अध्यक्ष हैं। माहेश्वरी समाज को उन पर गर्व है। बहुत सुलझे हुए व्यक्ति हैं। उन्होंने शिक्षा का प्रसार और शैक्षणिक संस्थाओं की बढ़ोत्तरी को अपने कार्यकाल में प्राथमिक महत्ता देने का निश्चय किया है। वे इस दिशा में ठोस कदम उठा चुके हैं। परिणाम भी सामने आने लगे हैं। उन्होंने हाल ही में नेपाल के एक कार्यक्रम में जहां हम दोनों उपस्थित थे, मुझे बताया कि उन्होंने माहेश्वरी महासभा में एक 'प्रोफेशनल सैल' गठित किया है जो कमोवेश उसी उद्देश्य की पूर्ति करेगा जो हमारा है। इंदौर में 'माहेश्वरी प्रोफेशनल सोसाइटी' का गठन हुआ है। प्रारंभ में दस-बीस सदस्य थे। अब उनकी सदस्य संख्या लगभग सौ तक पहुंच रही है। सदस्यों में अधिकांशतः चार्टर्ड एकाउंटेंट, आर्किटेक्ट, डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक (प्रोफेसर, लेक्चरर), डॉक्टर जैसे व्यक्तियों से जुड़े लोग हैं। वे लोग समय-समय पर नियमित रूप से एक स्थान पर मिलते हैं, विचार विनिमय करते हैं और संगठित हो रहे हैं।

चाहे संस्था हो या कोई परिवार, यह आवश्यक है कि उसके सदस्य समय-समय पर नियमित रूप से मिलें अवश्य, और मिलकर बैठें अवश्य। ताकि उनके बीच विचारों का आदान-प्रदान हो और वे एक दूसरे के विषय में जानकारी ले सकें। जिस परिवार के सदस्य प्रतिदिन कम से कम एक बार आपस में मिलते नहीं हैं, वह परिवार टूट जाता है। जिस समाज के सदस्य समय-समय पर एक दूसरे से मिलकर परस्पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए समय नहीं निकाल पाते वह सदस्य चाहे किसी भी सम्माननीय नाम से जाने जाते हों, एक समूह तो हो सकता है, किन्तु संगठन नहीं हो सकता। आई० आई० एम० एस० की परिकल्पना के पीछे सबसे बलवती विचार यह है कि इस

संस्था के सदस्य एक निश्चित अन्तराल के उपरांत नियमित रूप से एकत्रित हो कर एक स्थान पर मिलें और विचारोद्बोधन करें।

मेरी चाह इस संस्था को कुछ इस प्रकार के ढांचे की बनाने की और इसकी कार्यपद्धति कुछ ऐसी रखने की है जैसी कि अन्तर्राष्ट्रीय, सेवा संस्था रोटरी की है। रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय, जो इस समय विश्व की सर्वोत्कृष्ट सेवा संस्थाओं में से एक है, प्रारंभ सन् 1904 में केवल चार व्यक्तियों की सदस्यता से हुआ था। वे लोग अपनी नियमित सभाएं बारी-बारी से एक-एक सदस्य के घर पर क्रम से रखते थे। सदस्य के चयन की कसौटी यह थी कि वह अपने व्यवसाय या व्यापार का सफलतम व्यक्ति हो और उस पेशे का प्रतिनिधित्व कर सके। आज लगभग 102 वर्ष का सक्रिय जीवन जी लेने के उपरांत इस संस्था के हजारों क्लब और विश्व भर में लगभग 12.5 लाख सदस्य हैं। इस संस्था की सदस्यता आवेदन पत्र देने से या मांगने से नहीं मिलती; सदस्यता के लिए व्यक्ति को चुना जाता है। सप्ताह में एक बार सभा होती है और प्रत्येक सदस्य की उसमें उपस्थिति पर जोर दिया जाता है। नियमित रूप से साप्ताहिक सभाओं में मिलजुल कर लगभग एक घंटा बैठना और समाज सेवा के लिए संकल्पित होकर प्रकल्पों को चुनना, यह संस्था की कार्यपद्धति का मूल आधार है। सौ वर्ष से अधिक प्रयोग कर परखे गए इन सूत्रों का प्रयोग इस संस्था में भी किया जाए। हम एक छोटी शुरुआत करें और धीरे-धीरे आगे बढ़ें। **Slow but steady**। धीमे मगर स्थिर। मैं नहीं चाहता कि हम शुरुआत में ही कोई लंबी उड़ान भरें या छलांग मारें। इसमें गिरने की संभावना अधिक होती है। मैं नहीं चाहता कि हम ऊपर से नीचे चलें। बेहतर होगा कि हम नीचे से ऊपर चलें।

महात्मा गांधी, जिन्हें राष्ट्रपिता की संज्ञा दी गई और जिन्होंने इतने बड़े स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया, वे बड़े-बड़े काम की छोटी शुरुआत किया करते थे। उनकी प्रार्थना परमेश्वर से यह होती थी कि हे प्रभु! मुझे सिर्फ एक कदम उठाने की शक्ति दे पर यह कदम सही दिशा में हो। उनको विश्वास था कि यदि एक कदम सही दिशा में उठ जाए तो हजार कदम की यात्रा भी पूरी अवश्य होती है।

जयपुर के सुप्रसिद्ध विद्यालय 'स्टेप बाई स्टेप' की संचालिका सुश्री जयश्री पेड़ीवाल सौभाग्य से इस सभा में उपस्थित हैं। मैं तो चाहता हूँ कि यदि वे अपने प्रतिलिप्याधिकार (copyright) का उल्लंघन न माने तो 'स्टेप बाई स्टेप'—कदम—दर—कदम हम एक मंत्र की तरह अपनाकर अपना प्रेरणा सूत्र बना लें। एक लक्ष्य बना कर एक कदम उठाएं और कदम ब कदम चलें। हमारे कदम मज़बूत पड़ेंगे। चाहे धीरे चलें पर मंज़िल तक अवश्य पहुंचेंगे।

मैं यह भी चाहता हूँ कि संस्था की सदस्यता और नेतृत्व, दोनों ही युवाओं के हाथ सौंपा जाए। हम लोग उपलब्ध हैं किन्तु अपने अनुभव का लाभ और मार्गदर्शन देने के लिए। वह भी तब, जबकि चाहा जाए। हम लोग संस्था से जुड़े रहेंगे। किन्तु, संस्था के गठन और उसे सक्रियता और गति देना, यह ज़िम्मेदारी युवाओं की होनी चाहिए, यथासंभव 25 से 50 वर्ष के वयवर्ग की।

मैं पहले कह चुका हूँ कि आई० आई० एम० एस० की सदस्यता बुद्धिजीवियों के लिए होनी चाहिए। यह बुद्धिजीवी क्या है? अर्थशास्त्र के सिद्धांत के अनुसार किसी भी उद्योग, व्यापार, व्यवसाय या अन्य आजीविका के प्रकल्प को चलाने के लिए पांच घटक चाहिए, जिनमें पूंजी, श्रम, एवम् बुद्धि प्रमुख हैं। यूँ तो कोई भी अध्यवसाय बिना सभी घटकों के नहीं हो सकता। कोई व्यापारी हो या उद्योगपति हो जिसने लाखों और करोड़ों रुपये की पूंजी लगा कर अपना काम शुरू किया है वह भी यह कहते हैं कि क्या मैं श्रम नहीं करता? क्या मैं बुद्धि का प्रयोग नहीं करता? क्या बिना श्रम और बुद्धि के मैं केवल पूंजी से अर्जन कर लेता हूँ? उत्तर स्वाभाविक रूप से नकारात्मक होगा। किन्तु अन्तर यह है कि बुद्धिजीवी की पूंजी उसका मस्तिष्क होता है जिसे वह साथ लेकर चलता है। उसकी पूंजी न तो चुराई जा सकती है, न खर्च होती है; जितना प्रयोग किया जाए उतनी बढ़ती है। बुद्धिजीवी की मेरी परिभाषा है कि ऐसा व्यक्ति जो अपने मस्तिष्क और बौद्धिक संपदा का प्रयोग कर जीविकोपार्जन करता है, भले ही यत्किंचित पूंजी और शारीरिक श्रम का विनियोग भी उसे करना पड़ता हो। समाज के इस वर्ग का चिंतन और कार्यपद्धति उन लोगों से थोड़ी पृथक होती है जो व्यापार या उद्योग में कार्यरत हैं और पूंजी से पूंजी और लाभ का अर्जन करते हैं।

मेरी परिकल्पना है 'आई0 आई0 एम0 एस0' की सदस्यता उनके लिए खुली हो जो निम्न पांच सूत्रों में विश्वास करते हैं। इन सूत्रों को कुछ इस प्रकार सूचीबद्ध किया जा सकता है:—

सूत्र 1:— मुझे इस बात का सात्विक गर्व (अभिमान नहीं) है कि मैं माहेश्वरी हूं। मैंने एक सभ्य और सुसंस्कृत परिवार में जन्म लेकर एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज की सदस्यता जन्म से अर्जित की है।

सूत्र 2:— अपनी विद्या और बुद्धि का प्रयोग करते मैं अपने राष्ट्र की सेवा करने के लिए कृत संकल्पित हूं। राष्ट्र सेवा के प्रथम चरण के रूप में मैं अपने समाज को समृद्ध, सशक्त और संगठित करना चाहता हूं।

सूत्र 3:— मैं विश्वास करता हूं कि संगठन में शक्ति है। एक निश्चित अंतराल पर नियमित रूप से साथ मिल-जुलकर बैठने और विचारों का विमुक्त आदान-प्रदान करने से सामंजस्य स्थापित होता है जो संगठित होने के लिए अनिवार्य है।

सूत्र 4:— मेरा कर्तव्य है कि मैं राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक कदम के रूप में अपने समाज के बुद्धिजीवियों को संगठित करने के लिए समय दूं।

सूत्र 5:— राष्ट्र और समाज के निर्माण की इस यात्रा में यह प्रश्न गौण है कि समाज मुझे क्या देता है? अहम् प्रश्न यह है कि मैं समाज को क्या देता हूं और क्या दे सकता हूं?

.....